First Hematopoietic Stem Cell Transplant in KGMU in a patient of Blood Cancer (Myeloma)

The Department of Clinical Hematology, KGMU has major achievement as it attained a new milestone in the treatment of blood cancer. Dr. A. K. Tripathi, Professor and Head of the Department has revealed that this is a big step forward in achieving the goal of providing best treatment to the poorest of the poor. He has thanked the whole team. The team mainly included Dr. A.K. Tripathi and Dr. S.P. Verma (Clinical Hematology), Dr. Rashmi Kushwaha and Dr. Geeta Yadav (Department of Pathology) and Dr. Tulika Chandra (Transfusion Medicine) and Dr. Prashant from Microbiology.

Prof. MLB Bhatt, Hon' VC congratulated Dr. A.K. Tripathi and team for this commendable work and appreciated that the Department of Clinical Hematology is achieving several milestones one by one and is moving way forward to providing world class treatment to the common folks.

The patient Panne Lal was diagnosed one and a half year ago to be having a serious type of blood cancer (myeloma) at an early age of 38 years. He responded to treatment initially but within a year showed the relapse of the disease. At this point of time, we planned repeat therapy followed by Stem Cell Transplant (autologous SCT). As he is very poor, the medicines, kits, consumables were arranged from the hospital through asadhya rog scheme.

The process started on 13th March and stem cell was infused on 14th March. Patient was shifted to a special room in the transplant ward which has a complete sterile environment. His blood count dropped significantly after few days and he had some fever and diarrhea. He was put on hematopoietic growth factor and broad spectrum antibiotics. Patient started showing recovery in blood count within 10 days. He has normal counts and is completely asymptomatic. He will be discharged from the hospital in a day or two.

Dr. A.K. Tripathi has said that he has put demand for more man power and up-gradation of infrastructure so that the transplant unit can be run in full capacity and the Stem cell transplant can be made available to those who need it. Eventually another step in the future is to advance to Allogeneic Hematopoietic Stem cell Transplantation in patients with aplastic anemia and thalassemia.

प्रेस विज्ञप्ति

के.जी.एम.यू. के हेमेटोलॉजी विभाग में प्रथम बार ब्लड कैंसर (मायलोमा) के मरीज में हेमेटोपोएटिक स्टेम सेल का सफल ट्रांसप्लांट क्लिनिकल हेमोटोलॉजी विभाग, के.जी.एम.यू. की एक प्रमुख उपलब्धियों में से एक है, इससे विभाग में रक्त कैंसर के मरीजो के उपचार में एक नया आयाम हासिल किया जा सकेगा। प्रो. ए.के. त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष, हेमेटोलॉजी विभाग, के.जी.एम.यू. ने बताया कि अब इससे गरीब से गरीब मरीजो को अच्छा से अच्छा इलाज प्रदान करने के लक्ष्य को हासिल किया जा सकेगा। प्रो0 त्रिपाठी द्वारा यह भी बताया गया कि उपरोक्त सेल प्रत्यारोपण में चिकित्सकों के दल में प्रो. ए.के. त्रिपाठी, डॉ. एस.पी. वर्मा, नैदानिक हेमेटोलॉजी विभाग, डॉ0 रश्मि कुशवाहा एवं डॉ. गीता यादव, पैथोलॉजी विभाग, डॉ. तुलिका चंद्रा, विभागाध्यक्ष, ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग एवं डॉ. प्रशांत, माइक्रोबायोलॉजी विभाग शामिल थे। इस उपलब्धि के लिए चिकित्सा विश्वविद्यालय के मा. कुलपति प्रो. एम.एल.बी. भट्ट द्वारा डॉ. ए.के. त्रिपाठी और उनकी टीम को इस सराहनीय कार्य के लिए बधाई दी गई। उन्होने ने कहा कि हेमेटोलॉजी विभाग एक–एक करके कई सारी उपलब्धियों को हासिल करता जा रहा है तथा आम लोगों को विश्वस्तरीय उपचार प्रदान करने लिए आगे बढ़ रहा है।

मरीज पन्ने लाल उम्र 38 वर्ष को डेढ़ वर्ष पूर्व गंभीर प्रकार रक्त कैंसर मायलोमा का पता चला था। शुरूआती उपचार में मरीज को लाभ मिला किन्तु एक वर्ष के अन्दर मरीज के स्वास्थ्य में पतन दिखाई देने लगा। इस स्थिति मे मरीज को स्टेम सेल ट्रांसप्लांट (ऑटोलॉगस एससीटी) द्वारा पुनः उपचार देने की योजना बनाई गई। मरीज बहुत गरीब है अतः विभाग द्वारा असाध्य रोग योजना के अंतर्गत दवाएं, किट्स एवं अन्य समान उपलब्ध कराया गया।

स्टेम सेल ट्रांसप्लांट की प्रक्रिया 13 मार्च को प्रारम्भ हुई और स्टेम सेल 14 मार्च को मरीज को चढ़या गया। मरीज को ट्रांसप्लांट वार्ड के एक विशेष विसंक्रमित कमरे में शिफ्ट कर उपरोक्त प्रक्रिया की गई। मरीज का ब्लड काउंट कुछ दिनों तक धिर–धिरे कम हेता रहा और उसको हल्का बुखार एवं दस्त की भी समस्या रही। उसके पश्चात मरीज को हिमैटोपोटिक ग्रोथ फैक्टर एवं ब्राड स्पेक्ट्रम एंटी बायोटिक ट्रिटमेंट पर डाला गया उसके पश्चात मरीज में 10 दिन के अंदर ब्लड काउंट बढ़ने लगा। मरीज में अब नार्मल ब्लड काउंट है और वह पूर्णतः एसिम्प्टोमैटिक है। मरीज को दो दिनों मे अस्पताल से छुट्टी मील जाएगी।

डॉ. ए.के.त्रिपाठी द्वारा अधिक जन शक्ति और बुनियादी ढांचे के उन्नयन की मांग की गई है ताकि प्रत्यारोपण इकाई को पूरी क्षमता में चालाया जा सके और स्टेम सेल ट्रांसप्लांटको उन लोगों के लिए उपलब्ध करया जा सके जिनको इसकी आवश्यकता है। अंततः भविष्य में विभाग द्वारा ऐप्लॉस्टिक एनीमिया और थैलेसीमिया के रोगियों के उपचार के लिए एलोजेनिक हेमटोपोएटिक स्टेम सेल ट्रांस्प्लांटेशन की योजना पर कार्य किया जा रहा है।

प्रो0 नरसिंह वर्मा
संकाय प्रभारी,
मीडिया सेल, के.जी.एम.यू.

प्रो0 विभा सिंह
संकाय प्रभारी,
मीडिया सेल, के.जी.एम.यू.

डॉ0 सुधीर सिंह
सह–संकाय प्रभारी,
मीडिया सेल, के.जी.एम.यू.